संवाद

पत्रकारिता, जनसंचार एवं नवमीडिया स्कूल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

अप्रैल 2019 | चेतना से संवेदना तक | पृष्ठ संख्या: 4

केंद्रीय विश्वविद्यालय को मिली अपनी ज़मीन

केंद्रीय विश्वविद्यालय धौलाधार परिसर

हिमांशु शर्मा

केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश को 10 साल बाद आखिरकार जमीन मिल गयी जिसकी आधारशिला केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने देहरा और धर्मशाला में रखी। इस मौके पर केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री ने कहा कि केंद्रीय विश्वविद्यालय के दोनों परिसर 3 वर्षों में बन कर तैयार हो जाएँगे।

इस मौके पर जावड़ेकर समेत हिमाचल के मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर एवं सांसद अनुराग ठाकुर मौजूद थे। अपने संबोधन में हमीरपुर से सांसद अनुराग ठाकुर ने दावा किया कि 70% परिसर देहरा में और 30% धर्मशाला के पास स्थित जदरांगल में होगा। उन्होंने कहा की इस से दोनों क्षेत्र शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास की ओर अग्रसर होंगे। हालाँकि कैंपस के लिये जदरांगल में 2400 एकड़ से आधिक जगह चिन्हित की गयी है, पर वर्तमान में सरकार लगभग 50 एकड़ गैर वन भूमि का प्रबंधन कैंपस के लिये करेगी। देहरा में लगभग 200 एकड़ जमीन पहले ही विश्वविद्यालय के नाम स्थानांतरित हो चुकी है।

इस अवसर पर जावड़ेकर ने कहा कि हि.प्र.क्रे.वि. के भवन निर्माण के लिये वन मंजूरी तब ही दे दी गयी थी जब वे केन्द्र में वन एवं पर्यावरण मंत्री थे और अब विश्वविद्यालय परिसर को जल्द पुरा करने के लिये केन्द्र सरकार हर संभव सहायता प्रदान करेगी। कुलपति, प्रो कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री, ने कहा की परियोजना की अनुमानित लागत 1300 करोड़ रुपय होगी। उन्होंने कहा की व्यास नदी का संस्कृत नाम 'विपाशा' है और नदी के किनारे बनने वाले इस परिसर का नाम इस पर रखा जायेगा।

यूँ तो केंद्रीय विश्वविद्यालय 2010 में अस्तित्व में आया था तब से यह शाहपुर और धर्मशाला में अस्थायी परिसरों से कार्यशील है ।स्थायी परिसर उप्लब्ध ना होने के कारण विश्वविद्यालय को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था।

वर्तमान में 2000 से आधिक विद्यार्थी विश्वविद्यालय के 4 अस्थायी परिसरों में पढ़े रहें है। भविष्य में वि.वि. में 14 स्टडी स्कूल और लगभग 70 अध्यन विभाग होंगे। इसके अलावा 40 के करीब अध्यन केंद्र होंगे। स्थायी कैंपस मिलने की आशा पर हि.प्र.क्रे.वि. के सभी सदस्यों ने बेहद खुशी व्यक्त की।

de-layer

संवाद ई-पत्र व अन्य रोचक लेखों के लिए हमारे ब्लॉग पर जाएं:

www.de-layer.blogspot.in

प्राचीन विंध्यवासिनी मंदिर शीघ्र ही हो जायेगा नज़रों से ओझल!

ऋतू शर्मा

विंध्यवासिनी देवी का लगभग ५०० वर्ष प्राचीन पौराणिक मंदिर धौलाधार पर्वतमाला में स्थित है। ऐसी मान्यता है कि एक बार गद्दी जनजाति का एक युवा चरवाहा अपनी भेड़ों को चराने के लिए गया। वहां उसने जंगल से आती हुई रौशनी देखी। उसने उत्सुकतावश उस रौशनी का पीछा किया और देखा कि वहां एक वृक्ष के नीचे ९ कन्याएँ ध्यानमग्न थीं जिनके मुख से उस तीव्र ज्योति का उद्गम हो रहा

विंध्यवासिनी देवी की मूर्ति

था। तभी उनमें से नौवीं कन्या ने आँखें खोलीं और कहा कि मैं देवी विंध्यवासिनी हूँ। उन्होंने उस चरवाहे को आदेश दिया कि मुझे अपने गाँव ले चलो और मेरे मंदिर की स्थापना करो। ऐसा कहकर वे एक मूर्ति के रूप में परिवर्तित हो गयीं। देवी की इसी मूर्ति को उस चरवाहे ने विंध्यवासिनी मंदिर में स्थापित किया। इस मंदिर तक जाने का रास्ता बेहद ही उबड़-खाबड़ एवं

मंदिर को जाता हुआ कच्चा रास्ता

जोखिम भरा था जिसके कारण श्रद्धालुओं का वहां तक पहुंचना काफी कठिन था। अतः पालमपुर में एक सुगम स्थल पर नवीन विंध्यवासिनी मंदिर का निर्माण किया गया। इस नए मंदिर तक पहुँचाना आसान था जिसके फलस्वरूप यह शीघ्र ही प्राचीन मंदिर से अधिक प्रसिद्ध हो गया।

इस मंदिर की व्यवस्था के लिए कई पुजारिओं एवं श्रद्धालुओं का सहयोग मिलता है परन्तु प्राचीन मंदिर की देखभाल का ज़िम्मा सिर्फ एक पुजारी के कन्धों पर है। चूँकि यहाँ आने वाले श्रद्धुलाओं की संख्या भी अधिक नहीं है अतः आमदनी भी सीमित है जिसके कारण मंदिर का रखरखाव भी मुश्किल होता है. इस मंदिर तक पहुँचने के लिए एक सुरंग से होकर गुज़रना पड़ता है जो कि कभी भी टूट सकती है. यदि ऐसा होता है तो इस मंदिर तक पहुँचना और भी कठिन हो जायेगा और एक मनोरम प्राचीन धरोहर अतीत के पन्नों में गुम हो जायेगा।

कचरे के ढेर ने स्थानीय लोगों का जीना किया मुहाल

प्रिया नागर

धौलाधार रेंज की ख़ूबसूरत वादियों में बसे शहर धर्मशाला जिसे 'डिवाइन धर्मशाला' भी कहा जाता है कि असल तस्वीर महज़ पहाड़ों की सफ़ेद चादर की तरह चमकदार नहीं है। इसे 'ईज़ ऑफ़ लिविंग इंडेक्स' में 56वां स्थान भी मिला है। शहर में स्थित हिमाचल रोड ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन वर्कशॉप के पास एक गांव सुधेड़ में ग़ैरक़ानूनी तरीके से कचरा फेंकने से आम जनता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग़ौरतलब यह है कि कई वर्षों से यहाँ नगर निगम द्वारा वन क्षेत्र में कचरा फेंकने से कूड़े का ढेर बन गया है। स्मार्ट शहरों में शामिल धर्मशाला शहर को स्वच्छ भारत मिशन ने रंगीन कूड़ेदान तो दिए लेकिन उससे लगते इस गाँव के लिए नई परेशानी खड़ी कर दी है।

"कचरा फेंका भी जाता है और जलाया भी, प्लास्टिक, कपड़ा और हर तरीक़े के कचरे को नष्ट करने के लिए गांव के पास ही जलाया जाता है।" ऐसा सुधेड़ निवासी सीमा का कहना है। वे आगे कहती हैं कि हानिकारक धुंए से कई लोगों को साँस से सम्बंधित बीमारियाँ भी हो रही हैं। तक़रीबन 5-6 साल पहले ठोस कचरे को ख़त्म करने के लिए कतरन संयंत्र भी लगाया गया था जो कि आज तक प्रयोग में नहीं लाया जा सका है। कचरा जलाने के बाद उसका सही ढंग से निस्तारण करने के बजाय साफ़ पानी के खड्डों में फेंक दिया जाता है जिससे पीने का पानी भी प्रदूषित हो रहा है। लकड़ी के काम से जुड़े महेश चिंतित स्वर में कहते हैं कि "पिछले वर्ष दूषित पानी पीने से गांव में महामारी जैसा माहौल हो गया था। लोग दस्त एवं पीलिया जैसे रोगों का

कचरे का ढेर (प्रतीकात्मक चित्र)

शिकार हो गए थे"| नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने 2 जनवरी को नगर निगम, धर्मशाला और हिमाचल प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को सुधेड़ में कचरे के अवैध डंपिंग के मामले को देखने के निर्देश दिए थे जोकि सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा था। ग्रीन ट्रिब्यूनल ने यह संज्ञान बागेश्वरी महिला मंडल की प्रधान सुनीता ठाकुर के आवेदन पर लिया था। उपरोक्त गांव में खड्ड के पानी के अलावा और पीने के पानी का कोई अन्य स्त्रोत भी नहीं है। आसपास की सभी जगहों जैसे क़ोतवाली बाज़ार के निचले हिस्से के निवासियों को इसी खड्ड के पानी पर निर्भर होना पड़ता है। यह मुश्किल बारिश के वक़्त और बढ़ जाती है. बारिश के मौसम में गंदगी बह कर साफ़ पानी में मिल जाती है जिसकी बदबू असहनीय हो उठती है। स्थानीय निवासियों के अनुसार यह स्थान मच्छरों का प्रजनन स्थल बन चुका है। इन सब समस्याओं के अतिरिक्त न तो शहर प्रबंधन की उचित व्यवस्था दिखती है और न ही फ़िलहाल इसके निवारण में प्रशासन मुस्तैद दिखता है|

हालात के आगे मजबूर प्रतिभा

निकिता सिंह

धर्मशाला शहर का कचहरी बाज़ार है| हनुमान मंदिर के साथ वाली सड़क के किनारे किनारे सब्ज़ियों व फ़लों की दुकानें सजी हुई हैं. उन्हीं दुकानों में एक दुकान जो बाक़ी सबसे अलग है. पिछले 5 साल से हनुमान मंदिर के पास सब्ज़ी मंडी में दो बहनें अपना सब्जी व फ़लों का ठेला लगाती हैं। चेहरे पर बिना किसी शिक़न के सबसे नमस्ते और हेलो बोलते हुए वे सब्ज़ी तौलती हैं लेकिन हर वक़्त मुस्कुराते दिखने वाली इन दोनों बहनों की कहानी बेहद उलझी व उदास करने वाली है । बड़ी बहन अमरजोत कौर सिर्फ़ असल ज़िन्दगी की नायिका नहीं हैं बल्कि उन्होंने खेलकूद में भी अपना और अपने माता पिता का नाम आस-पास के जिलों तक रौशन किया है। अमरजोत और उनकी बहनों का जीवन आम लोगों से काफ़ी अलग है। अमरजोत अपनी दो बहनों ओर दो भाइयों के साथ एक छोटे से किराये के मकान में रहती हैं। सिर पर माता पिता का साया न होने के कारण उन्हें सब्ज़ी बेचने के व्यवसाय को अपनाना पड़ा ताकि वो अपने परिवार का पेट पाल सकें।

अमरजोत के संघर्ष की कहानी उसके जाँबाज़ होने की निशानी है । उसके चेहरे पर दुख की शिकन नहीं बल्कि कुछ कर दिखाने का जज़्बा है। अमरजोत दसवीं कक्षा तक पढ़ी हैं । परिवार के हालात नाज़ुक होने के कारण और पिताजी की बीमारी के चलते उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। इन्होंने सरकारी योजना के तहत पार्लर का काम सीखा और फिर अपने घर का पालन-पोषण करने के लिए

सब्ज़ी बेचती अमरजोत (चित्र : निकिता सिंह)

कुछ वक़्त जम्मू में भी काम किया। अमरजोत कौर वास्तविक जीवन में चैंपियन का किरदार निभाने के साथ-साथ राज्य स्तरीय चैंपियनशिप और राष्ट्रीय बास्केटबाल चैंपियनशिप में भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर चुकी हैं। अमरजोत की छोटी बहन फ़िलहाल ग्यारहवीं के इम्तिहान की तैयारी में जुटी है। हालात साथ न हों तो अपने लोग भी साथ छोड़ देते हैं। इसी तरह अमरजोत के परिवार का भी साथ किसी परिजन इस मुश्किल वक़्त में नही दिया।

हिमाचल की बेटी इस बेटी ने सन 2009 में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला शाहपुर में हुई प्रतियोगिता में धर्मशाला का प्रतिनिधित्व किया है जिसमें वो विजेता के रूप में उभरीं। इसके साथ सन 2010 में मंडी खेल प्रतियोगिता में भी अमरजोत ने प्रतिभाग किया था। राज्य स्तरीय महिला खेल समाहरोह 2010-11 में उनका पहला स्थान रहा है। सन 2010 कोटला में भारतीय खेल प्राधिकरण नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान पटियाला द्वारा आयोजित जिला ग्रामीण प्रतियोगिता में भी वह दूसरे स्थान पर रही थीं । सन 2013 के आंचलिक टूर्नामेंट में अमरजोत ने बैडमिंटन में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। यही नहीं सन 2011 में जयपुर में हुए तीसरे राष्ट्रीय ग्रामीण टूर्नामेंट में अमरजोत ने हिमाचल प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया था एवं रैत में हुए जिला महिला खेल उत्सव 2010 में भी वह पहले स्थान पर आयी थीं ।

इतनी उपलब्धियों व प्रतिभा का धनी के होने के बावजूद अमरजोत धर्मशाला में सब्जी बेच कर अपने परिवार का पालन पोषण करने को मजबूर हैं। अमरजोत ने बताया कि वह चाहती हैं कि इन उपलब्धियों के दम पर एक अच्छी नौकरी हासिल कर सकें । वे सरकारी मदद की भी उम्मीद करती हैं जिससे वह अपने परिवार का पालन पोषण अच्छे से कर सकें तथा अपने खेल को आगे भी जारी रख सकें।

अतिथि लेख...

मैं दिल्ली हूँ

है जुग मेरी छाती से गुजरा
वक्त का क्रंदन सुन -सुन
रकत सींचित , पली बढ़ी हूँ
चोट सहती लड़ी हुं, घड़ी हूँ
चोंगे भर गरिमा जिस खूंटी से लटका
वह किल्ली हूँ
मैं दिल्ली हूँ।

अहले - सुबह उजड़ी हूँ बसी हूँ
दुल्हन सी , घूंघट में रोई हूँ हसी हूँ
जाति से न मेल हूँ ना फीमेल हूँ
राजनीति में कुर्सी का खेल हूँ
चुका , दिया जिसने टपका
पाया , जिसने टांग अड़ा लपका
मौका परस्त हाथों में फंसी
गेंद नहीं हूँ , नहीं गिल्ली हूँ
मैं दिल्ली हूँ।

--सर्वेश कुमार मिश्रा

रक्षा के शिखर पर महिलाओं का परचम....

दीक्षा कुलश्रेष्ठ

वर्तमान में महिलाएं उन क्षेत्रों में भी सबसे अग्रणी हैं जिसकी कुछ दशक पहले कल्पना करना भी असंभव था। ऐसा ही एक क्षेत्र है रक्षा -क्षेत्र। जब भी रक्षा अथवा सैन्य मसलों का ज़िक्र होता है तो ज़्यादातर पुरुषों को वाहवाही दी जाती हैं। भारत की महिलाओं का नाम आज भी इस क्षेत्र में कहीं गुम है। ऐसा नहीं है कि महिलाओं का योगदान इस क्षेत्र में कम है बल्कि तमाम महिलाएं हैं जो कि अपनी सेवाएं रक्षा व सैन्य-सम्बंधित क्षेत्रों में दे रही हैं। रक्षा-क्षेत्र में भारतीय महिलाएं आज अपनी क़ाबिलियत का लोहा मनवा रही हैं।

रक्षा शब्द सुनते ही जो नाम ज़हन में आता है वह है ' टेसी थॉमस' का। इनका जन्म अप्रैल1964, केरल में हुआ था। एमटेक तक पढ़ी टेसी ने अपनी आरंभिक शिक्षा सेंट माइकल हाईयर सेकेंडरी स्कूल से ग्रहण करी, उसके बाद गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज, त्रिशूर से इंजीनियरिंग की व साथ ही एमटेक, 'गाइडेड मिसाइल' में पुणे से पूरी करी। सन 1998 में टेसी डीआरडीओ से जुड़ गयीं, जहाँ इन्होंने सन 2011 में मिसाइल लॉन्चिंग की प्रोजेक्ट निदेशक बनने का गौरव हासिल किया। जिसके बाद टेसी मिसाईल वुमन यानि कि 'अग्निपुत्री' के नाम से लोकप्रिय हुईं। अपना पहला मिसाईल प्रोजेक्ट डॉ. अब्दुल कलाम के के निर्देशन में पूरा करने के साथ अग्नि-2,अग्नि-3,

जे मंजुला

अग्नि-4 प्रक्षेपास्त्र की प्रमुख टीम का हिस्सा बनना उनकी बड़ी उपलब्धियों में से एक है। टेसी किसी मिसाईल प्रोजेक्ट का नेतृत्व सँभालने वाली भारत की पहली महिला हैं। वे रक्षा अनुसन्धान व विकास संगठन(डीआरडीओ) में एडवांस सिस्टम लैब (हैदराबाद) की डायरेक्टर भी रह चुकी हैं। सुर्ख़ियों से दूर रहने वाली टेसी थॉमस ने अपना अब तक का जीवन पृथ्वी, आकाश, अग्नि, नाग, धनुष, त्रिशूल तथा ब्रह्मोस मिसाईलों के अनुसंधान व उनके परिष्करण में व्यतीत किया है।

चेहरे पर सौम्य मुस्कान लिए टेसी किसी आम घरेलू भारतीय महिला की ही तरह साड़ी पहनती हैं, बिंदी लगाती है और मंगलसूत्र भी पहनती हैं। गाड़ियों के उत्पादन में अग्रणी कंपनी महिंद्रा ने गत वर्ष अपनी गाड़ियों के नये संस्करण नाम टीयूवी टेसी रखने का निर्णय लिया था। टेसी के परिवार में

टेसी थॉमस

इनके पति सरोज, जो कि नेवी में कमांडर हैं व एक बेटा तेजस है। तेजस अपनी माँ को पानी प्रेरणा मानते हाँ और इसी क्षेत्र में आगे देश की सेवा करना चाहते हैं। थॉमस को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाज़ा से भी जा चुका है।

टेसी थॉमस की ही परंपरा को आगे बढ़ाते हुए जे मंजुला ने भारतीय सेना को आधुनिकतम इलेक्ट्रॉनिक संचार सिस्टम से लैस करने के काम को चुना। सन 2015 में भारतीय रक्षा मंत्रालय के संस्थान, रक्षा अनुसंधान व विकास संगठन(डीआरडीओ) में पहली बार किसी महिला को महानिदेशक (इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार प्रणाली संकुल) की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी| इससे पूर्व में मंजुला जुलाई 2014 से रक्षा वैमानिकी अनुसन्धान प्रतिष्ठान (डीएआरई)का नेतृत्व कर रही थीं। डीआरडीओ के डिफेंस एविओनिक्स रिसर्च इस्टेबलिशमेंट की महानिदेशक बनने वाली भी प्रथम महिला थीं। मंजुला की पढाई इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हुई है। सन 1962 में आंध्रप्रदेश के नेल्लौर जिले में जन्मी मंजुला ने हैदराबाद की उस्मानिया विश्वविद्यालय से पढाई की है। ये वह दौर था जब महिलाओं की शिक्षा ज़रूरी नहीं समझी जाती थी इसके बावजूद मंजुला के माता-पिता ने उन्हें ख़ूब प्रोत्साहित किया। सन 1987 में डीआरडीओ में उनके करियर की शुरुआत हुई। सन 2018 में मंजुला को इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन सिस्टम की डायरेक्टर बनाया गया है। रक्षा अनुसन्धान क्षेत्र के अति महत्वपूर्ण पदों की ज़िम्मेदारी निभाने वाली मंजुला को डीआरडीओ अवॉर्ड फॉर परफॉर्मेंस एक्सीलेंस, साइंटिस्ट ऑफ द ईयर 2011 और 2014 में इंडिया टुडे वुमन समिट अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है। जिल्लेलामुदी मंजुला की प्रमुख जिम्मेदारियों में भारतीय सेना के लिए रेडार आत्मसुरक्षित, जैमर, इलेक्ट्रोऑस्टिक यूनिट इत्यादि विकसित करना है।

पारंपरिक लिबास में लिपटीं ये दोनों महिलाएं आज के आधुनिक भारत का प्रतिनिधित्व करती हैं। टेसी और मंजुला इस बात का प्रमाण हैं कि यदि सही अवसर उपलब्ध कराये जाएँ तो राकेट साईंस के जुमले को भी ये लड़कियां सच साबित कर बैठती हैं। चकाचौध से दूर रहने ये दोनों हस्तियाँ महिलाओं के लिए वास्तविक प्रेरणा स्त्रोत हैं।

फिल्म 83 के लिए धर्मशाला पहुंचे कपिल देव और रणवीर सिंह

धर्मशाला स्टेडियम में कपिल देव और रणवीर सिंह

आरती पठानिया

विश्व के क्रिकेट मैदानों में मशहूर धर्मशाला स्टेडियम इन दिनों खेल नगरी के साथ साथ फिल्म नगरी में बदल गया है। इन दिनों फिल्म जगत में धूम मचाने वाले कलाकरों व भारतीय क्रिकेट के पूर्व खिलाडिय़ों को धर्मशाला में आमतौर पर देखा जा सकता है। इन प्रसिद्ध हस्तियों के धर्मशाला पहुंचने का मुख्य कारण भारत की 1983 विश्व कप जीत पर आधारित फिल्म 83 है।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर मोहिन्द्र अमरनाथ और बलविंदर सिंह संधू आजकल धर्मशाला स्टेडियम में अभिनेताओं को क्रिकेट की बारीकियां सिखा रहे हैं। फिल्म 83 का निर्देशन कबीर खान ने किया है। इनके साथ मधु मंटेना और विष्णु इंदुरी भी फ़िल्म निर्माण में सहयोग दे रहे हैं। रिलायंस इंटरटेनमेंट फिल्म 83 को प्रस्तुत कर रहा हैं। मोहिन्द्र अमरनाथ से पहले धर्मशाला स्टेडियम में 1983 विश्व कप विजेता भारतीय टीम के कप्तान कपिल देव भी रणवीर सिंह को ट्रेनिंग देने पहुंचे थे। कपिल देव की मौजूदगी में रणवीर सिंह ने दो दिनों में करीब एक हजार गेंद फेंक कर एक्शन और दौड़ने की तकनीक पर काम किया था। इतना ही नहीं कपिल ने रणवीर को बल्लेबाजी का भी अभ्यास करवाया था। फिल्म 1983 क्रिकेट विश्व कप भारत की ऐतिहासिक जीत पर आधारित है।

रणवीर सिंह ने अपने इंस्टाग्राम प्रोफाईल पर कप्तान कपिल देव के साथ फोटो व विडियो अपलोड किए हैं। फिल्म 83 में साकिब सलीम अमरनाथ की भूमिका निभाएंगे। अमरनाथ अभिनेता साकिब सलीम को भी विश्व कप विजय के दौरान टीम में अपनी भूमिका की बारीकियां सिखा रहे हैं। इसी तरह तेज गेंदवाज बलविंदर सिंह संधू का किरदार पंजाबी गायक एमी विर्क अदा कर रहे हैं। बलविंदर सिंह संधू टीम के साथ पहले दिन से ही बने हुए हैं और मैदान में पूरी टीम को ट्रेनिंग दे रहे हैं।

पूरी टीम धर्मशाला स्टेडियम में प्रैक्टिस कर मुंबई वापिस हो जाएगी जिसके बाद अगले महीने पूरी टीम इंग्लैड शूटिंग के लिए रवाना हो जाएगी। धर्मशाला में भी टीम ने एक अभ्यास मैच खेला जिसमें कुछेक शॉट फिल्म में प्रयोग करने के लिए शूट किए गए हैं।

छदम विज्ञापनों का समाज पर बढ़ता प्रभाव

अर्चना कुमारी

आज का दौर भूमंडलीकरण का दौर है और आज के इस दौर में उत्पादन के साधनों का विकास तेज़ गति से हो रहा है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि इन उत्पादित हो रही वस्तुओं को लोगों तक पहुँचाया जाए। इस कार्य को पूरा करने में आज विज्ञापन एक अहम हिस्सा निभा रहे हैं। विज्ञापन किसी उत्पादन को बेचने या प्रदर्शित करने के उदेश्य से किया जाने वाला प्रचार है। यह हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का अहम हिस्सा बन चुके हैं।

चलते-फिरते हम हजारों क़िस्म के विज्ञापनों को देखते हैं। यह अपने उत्पाद को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। आज उपभोक्तावादी संस्कृति का दौर है और इस दौर में हमारी जिंदगी में कुछ ऐसे विज्ञापन भी होते हैं जो हमें आंतरिक रूप को लुभाने की कोशिश करते हैं। इन्हें हम छदम विज्ञापन कहते हैं। यानि वह विज्ञापन जो छुपे हुए तरीकों से प्रतिबंधित वस्तुओं को लोगों तक पहुँचाते है।

उदाहरण के तौर पर कॉर्लसबर्ग अपनें गिलास से लोगों को लुभाने की कोशिश करता है। मैक डॉव्लस शराब होते हुए भी म्यूजिक सीरिज के रूप से खुद को लोगों तक पहुंचाने की कोशिश करता है तथा अन्य विज्ञापन पैकजिंग से अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यह अन्य विज्ञापनों की तुलना में जो साधारण है से अधिक आकर्षित करते हैं। यह विज्ञापन हमारी स्थिति पर काफी असर डालते हैं तथा हमारे रहन–सहन को काफी ज्यादा प्रभावित करते हैं।

हालाँकि सरकार ने इस प्रकार के विज्ञापनों के ऊपर समय-समय पर बहुत से कानून बनाए हैं। जैसे कोटपा आधिनियम 2003 में बनाया गया था। यह आधिनियम सिगरेट,तम्बाकू उत्पादन विज्ञापन को प्रतिबंधित करने व धुम्रपान व अन्य उत्पाद से होने वाले बुरे प्रभावों के बारें में जागरूक करने के लिए बनाया गया था। इसके अंतर्गत धारा चार में सार्वजानिक स्थलों में जैसे अस्पताल, खेल का मैदान, स्कूल, कैंटीन, सरकारी, व गैर सरकारी संस्थानों पर धुम्रपान निषेध है। इस कानून अनुसार 18 साल के से कम बच्चों को तम्बाकू और सिगरेट बेचना एक संगीन अपराध है। इसका उल्लंघन करने वालों को 200 रूपए का जुर्माना हो सकता है। इसके अलावा भारत सरकार द्वारा साल 2007-2008 में राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम (एनटीसीपी) को प्रारम्भ किया गया था। जिसके उदेश्य थे तम्बाकू सेवन के नुकसानदायक प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करना और तम्बाकू उत्पादों के उत्पादन एवं आपूर्ति में कमी करना।

इस प्रकार और भी कई समय-समय पर कार्यक्रम चलाए गए। परंतु तमाम कोशिशों के बावजूद गाहे-बगाहे समाज में आज भी यह कुरीतियाँ विद्यमान हैं। इसका प्रमुख कारण छदम विज्ञापनों का बढ़ता प्रभाव है। विज्ञापन भावनात्मक अपील से इस तरह पेश किए जाते हैं कि लोग भ्रमित हो जाते हैं। विज्ञापन में अक्सर लड़कियों को दिखाया जाता है और दोस्ती कायम रखने के लिए शराब का विज्ञापन दर्शाया जाता है।

वर्तमान समय में वह तमाम प्रकार के विज्ञापन जो प्रतिबंधित की श्रेणी में आते हैं वह सोशल मीडिया पर धड़ल्ले से जारी है। जिससे इसका असर सीधे तौर पर युवा पीढ़ी पर हो रहा है। इस प्रकार इसके दुष्परिणाम को जानते हुए भी कठोर कार्यवाही नहीं हो रही है। अगर इस तरह समय रहते इन पर कार्यवाही नहीं की गई तो आने वाले समय में काफ़ी भयंकर समस्या उत्तपन हो सकती हैं जिससे निजात पाना काफी मुश्किल होगा।

'सूर्योदय'-अंधेरे से उजाले की ओर ...

रीना ठाकुर

एक आम स्वस्थ्य आदमी रोज़ क्या करता है? सुबह उठता है, सैर पर जाता है, प्रकृति का नज़ारा देखता है और घर पहुंच कर रेडियो या टेलीविज़न पर समाचार सुनता है। इस तरह उसकी सुबह की स्वस्थ्य एक शुरुआत होती है लेकिन ज़रा सोचिए! यदि हम सुबह उठें और सैर पर जाने के लिए हमारे पैर न हो, आसपास प्रकृति का नज़ारा देखने के लिए आंखें ना हों, सुनने के लिए कान न हों, काम करने के लिए हाथ न हों तो कैसा लगेगा? एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए इन सबकी कल्पना करना भी बेहद कठिन है लेकिन समाज का एक वर्ग ऐसा भी है जो अपना जीवन ऐसे लोगों की सेवा में लगा रहा है। कई समाज सेवक हैं जो दिव्यांग लोगों को शिक्षण एवं कौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था करते हैं। ऐसी ही एक ग़ैरसरकारी संस्था धर्मशाला के योल में स्थित है। संस्था 'सूर्योदय चेरिटेबल ट्रस्ट' जो कि दिव्यांगों हेतु काम करती है। इस ट्रस्ट की संस्थापक श्रीमती अनुराधा शर्मा और सह संस्थापक सचिन शर्मा ने इसकी शुरुआत जून 2017 में मात्र 9 दिव्यांगों के साथ की और वर्तमान मं इस ट्रस्ट में 85 दिव्यांगजन हैं। इस ट्रस्ट को स्थापित करने का मक़सद दिव्यांग बच्चों को बोझ न समझकर उन्हें शिक्षण एवं कौशल प्रक्षिक्षण प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाना है।

इस ट्रस्ट की छाया में प्रशिक्षित होने वाले दिव्यंगों की कहानियाँ न सिर्फ़ हमें अचंभित करती है बल्कि प्रेरित भी करती हैं| इसी ट्रस्ट की प्रशिक्षु अर्चना जो शारीरिक रूप से विकलांग हैं, यहाँ आने के बाद वह 'सॉफ्ट टॉय' बनाने में इतनी सक्षम हो गई है कि वह अब दूसरों को भी प्रशिक्षित कर सकती है। सूर्योदय की संस्थापक अनुराधा शर्मा कहती हैं कि सामान्य

कार्यक्रम में भाग लेते दिव्यांग छात्र

बच्चों के लिए तो बहुत सारे स्कूल होते हैं लेकिन दिव्यांगों के लिए बहुत ही कम स्कूल हैं। उनके इस सराहनीय कार्य को देखते हुए उन्हें समाज तथा सरकार की ओर से काफी मदद मिलती है। यहां पर शाहपुर, क्यारा, चामुंडा,खनियारा रोड, कांगड़ा, पालमपुर, रजोल, स्नोरा व धर्मशाला के दिव्यांग प्रशिक्षण प्राप्त करने आते हैं। यहाँ पढ़ने के साथ-साथ बच्चे खेलकूद में भी हिस्सा लेते हैं।

इस ट्रस्ट में वर्तमान में 4 साल के बच्चों से लेकर 51 साल तक के दिव्यांग हैं। ट्रस्ट द्वारा बच्चों को बहुत सी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के अवसर प्राप्त हुए हैं। राष्ट्रीय सरस मेले में इस ट्रस्ट के प्रशिक्षकों को चम्बा रुमाल बनाना सिखाया गया। 6 लड़कियों को पॉलिटेक्निक कांगड़ा की तरफ से 6 महीने का सिलाई-कढ़ाई का कोर्स कराया गया। इसके साथ ही बच्चों को सॉफ़्ट टॉय, चित्रकला के गुर सिखाये जाते हैं जिससे वह आत्मनिर्भर हों सकें। सूर्योदय के इन प्रयासों को देखते हुए हिमालयन परिवार द्वारा, 25 जनवरी को इलेक्शन डिपार्टमेंट द्वारा तथा 26 जनवरी को हिमाचल प्रदेश जिला कार्यालय द्वारा सम्मानित किया गया।

यहाँ भी जली शिक्षा की लौ...

बबिता ठाकुर

गमरु गाँव स्कूल धर्मशाला न केवल पिछले 12 वर्षों से बहुत गरीब परिवारों से आने वाले छोटे बच्चों के सपनों को पंख दे रहा है, ज्यादातर श्रमिक वर्ग, लेकिन यह समर्पित शिक्षकों के एक समूह द्वारा निस्वार्थ सेवा का एक उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। यह दो मंजिला स्कूल भवन किसी अन्य स्कूल की तरह दिखता है।

कुछ साल पहले तक एक अज्ञात संस्था, सभी बाधाओं के खिलाफ जीवित रहने वाला गमरू स्कूल, अब शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय अवधारणा के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। स्कूल की शुरुआत 2004 में एक ब्रिटिश नागरिक फिलिप एडम्स ने की थी, जो तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के निवास में छुट्टियां मनाते समय गमरु गाँव में कई बच्चों के साथ आए थे जो स्कूल नहीं जा रहे थे। स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर काम करते हुए, एडम्स ने स्वेच्छा से स्कूल की स्थापना की। उनके दोस्तों, विदेशियों के एक समूह, गाँव में रहने वाले और स्थानीय लोगों ने उनके प्रयासों को पूरा किया और मजदूरों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया। शुरुआत में 45 बच्चों के साथ एक छोटे से आवास में शुरू किया गया था, स्कूल में अब 182 छात्र हैं। उचित बुनियादी ढांचे के अभाव में, स्कूल चलाना समूह के लिए एक कठिन कार्य साबित हुआ। धन की कमी ने स्कूल के विकास को प्रभावित किया, लेकिन उन शिक्षकों के दृढ़ संकल्प और समर्पण को नहीं रोक सका, जिन्होंने गरीब मजदूरों के सपनों को जीवित रखने के लिए हर संभव कोशिश की। जिनके लिए स्कूल केवल बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल करने की उम्मीद की एक किरण था। 2007 में धन की कमी के कारण स्कूल लगभग बंद हो गया और लगभग एक साल तक शिक्षक और कर्मचारी बिना वेतन के रहे। इस बार बेल्जियम की एना मैरी आगे आईं और अपने एनजीओ के माध्यम से यूरोपीय देशों से धन पैदा करके मदद को बढ़ाया।

स्कूल की प्रिंसिपल मीनाक्षी शर्मा ने प्रोजेक्ट के लिए सरकारी स्कूल में नौकरी छोड़ दी है। शर्मा ने कहा, "कई बार स्कूल चलाने के लिए कोई धनराशि उपलब्ध नहीं थी और हमने इसे बंद करने पर विचार किया था।" छह साल से स्कूल को स्पांसर कर रही मैरी ने कहा कि जब उन्हें फंड की भारी कमी के बारे में पता चला तो वह वाटर फिल्टर डोनेट करने आईं। "यह एक सार्थक समर्थन करने वाला कारण था, इसलिए मैंने फंड बनाने का फैसला किया," मैरी ने कहा।

वह जिस बात की सबसे ज्यादा सराहना करती है, वह है शिक्षकों की मेहनत और समर्पण, जो न्यूनतम वेतन के बावजूद बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए काम कर रहे हैं। स्कूल छात्रों को मुफ्त किताबें, वर्दी और भोजन प्रदान करता है। औपचारिक शिक्षा के अलावा, छात्रों को शिल्प कार्य भी सिखाया जाता है।

धर्मशाला में आयोजित हुआ 'हिमाचल-लेटस टॉक'

नेहा ठाकुर

हिमाचल-लेट्स टॉक धर्मशाला में 27 फरवरी 2019 को AK प्रोडक्शन द्वारा लायंस क्लब में आयोजित करवाया गया। इस इवेंट की थीम 'Hear the unheard' रखी गयी| शहर में इस तरह के आयोजन का उद्देश्य हिमाचल के सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स को अपने ही शहर में एक प्लेटफार्म उपलब्ध कराना है।

इस इवेंट में ईशा गुप्ता (अभिनेत्री), ईशा शर्मा (अभिनेत्री), निवेदिता वशिष्ठ (फैशन ब्लॉगर) और अभिनव नाग (गायक) मुख्य अतिथियों के तौर पर शामिल थे। इन सभी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स ने अपने हुनर से बाहरी शहरों में तो ख़ूब नाम कमाया है लेकिन अपने शहर में कहीं गुमनाम हैं।

कार्यक्रम के संयोजक सुरजीत सिंह कहते हैं, " 'हिमाचल-लेटस टॉक' का मूल मक़सद इन कलाकारों के अपने क्षेत्रों में किये गये संघर्षों के ज़रिये युवाओं को प्रेरित करना है। हिमाचल-लेटस टॉक का कारवां जो कि मनोरंजन दुनिया से शुरू हुआ लेकिन सिर्फ वहाँ तक ही सीमित नहीं रहेगा। हम विभिन्न क्षेत्रों से दर्शकों को जोड़ने का प्रयास करेंगे।" कार्यक्रम की अतिथि और फैशन ब्लॉगर निवेदिता वशिष्ठ कहती हैं कि 'मैं बहुत ख़ुश हूँ क्योंकि हिमाचल में यह मेरा पहला कार्यक्रम था और अपनी ही जगह पहचान मिलने से अच्छी बात और क्या हो सकती है।"

अभिनेत्री ईशा शर्मा से बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि उन्हें लोगों को प्रेरित करना बहुत पसंद है। मुझे एक मौका दिया गया जहां मैं लोगों को अपने संघर्ष व अनुभवों से प्रेरित कर सकूँ इसलिए मैं इस कार्यक्रम से बेहद संतुष्ट हूँ। इस कार्यक्रम को सोशल मीडिया पर काफी प्यार मिला है। इसे धर्मशाला में मनोरंजन स्तर पर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के लिए नया प्लेटफार्म कहा जा सकता है।

लेखों के लिए आमंत्रण

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित समाचारपत्रों - संवाद (हिन्दी) एवं voice (अंग्रज़ी) में यदि आप कोई स्वरचित समसामयिक लेख, समाचार, कहानी, कविता, व्यंग्य अथवा अन्य किसी विधा की रचना प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो उसे voicesamvaad@gmail.com पर भेज सकते हैं। लेखों की शब्द-सीमा ३०० है, हालाँकि ३०० से अधिक शब्दों वाली रचनाएँ भी संपादकीय निर्णयानुसार प्रकाशन हेतु स्वीकृत की जा सकती हैं। आपके द्वारा भेजी गयी रचनाओं के प्रकाशन के संदर्भ में अंतिम निर्णय संपादक मण्डल का होगा।

अतिथि लेख...

कुछ-कुछ

कुछ-कुछ इनसे, कुछ-कुछ उनसे
बातें जब मैं साझा करती हूं,
इनसे भी और उनसे भी बहुत कुछ ज्ञान भरती हूँ।
किसी से चंचल होना सीखा, तो किसी ने सिखाया स्थिर होना।
इन्होंने सिखाया आंसू छिपाना, तो उनसे पता चला कि कुछ जरूरी भी है रोना।
इसने सिखादी अंग्रेजी, तो उससे सीख ली मैंने हिंदी।
इधर कहना था कि काजल जचता है, तो वहां कुछ लोगों ने तारीफ में बताया कि जचती है कभी-कभी बिंदी।
किसी ने घरबार सिखा दिया, तो किसी ने पढ़ा दी पालिटिक्स।
इनसे मासूमियत की अहमियत पता चली,
तो उन्होंने सिखा दी बातों में लगाने की ट्रिक्स।

सदाबहार सोच मेरी कि वार्तालाप जरूरी,
हर दिन सीखते हैं और इस प्रक्रिया के बिना है जिंदगी अधूरी।
मैं आज जो कुछ जानती हूँ, आप सब के बिना न जान पाती।
आप सब ने मुझे भरपूर सिखाया, सब की हूँ मैं धन्यवादी।
कुछ-कुछ इनसे कुछ-कुछ उनसे,
बातें यूं ही साझा करती रहूंगी।
इनसे भी और उनसे भी ता उम्र ज्ञान भरती रहूंगी।

कुछ-कुछ इनसे, कुछ-कुछ उनसे।

--वंशिता शर्मा

संवाद टीम

अर्चना कुमारी, आरती पठानिया, ऋतू शर्मा, कामिनी राणा, दीक्षा कुलश्रेष्ठ, निकिता सिंह, नेहा ठाकुर, प्रिया नागर, बबीता ठाकुर, रीना ठाकुर, हिमांशु शर्मा

पृष्ठ-सज्जा

- प्रिया नागर
- नेहा ठाकुर
- निकिता सिंह

संपादक मण्डल

- प्रिया नागर
- दीक्षा कुलश्रेष्ठ

संवाद दाता

- अर्चना कुमारी
- आरती पठानिया
- ऋतू शर्मा
- दीक्षा कुलश्रेष्ठ
- निकिता सिंह
- नेहा ठाकुर
- प्रिया नागर
- बबिता ठाकुर
- रीना ठाकुर
- हिमांशु शर्मा